ResearchNext International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026 ISSN (O)- 3107-9725

Email id: editor@researchnextjournal.com Website- www.researchnextjournal.com

रामचरितमानस और संवाद संस्कृति का परिवेश

डॉ. पी.एम. भुमरे

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.एम.बी.पी.के. महाविद्यालय, शंकरनगर, बिलोली, नांदेड़

Article Info: *(Recieved- 20/12/2025, Accept- 02/02/2026, Published- 10/02/2026)*

DOI- 10.64127/rnimj.2026v2i1003

रामचरितमानस का जब हम संधि–विच्छेद करते हैं तब हमें तीन शब्दों की प्राप्ति होती है। यथा राम+चरित+मानसत्र रामचरित मानस। रामचरित मानस का शब्दार्थ इस प्रकार है– राम के चरित्र (कृतित्व) का घर। राम का चरित ऐसा था जिसका अनुकरण अति प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य करता चला आ रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि राम के चरित्र में कोई विशेष विशेषता है जो सम्पूर्ण मानव समुदाय के लिए हितकारी है इसीलिए प्रत्येक श्रद्धावान मनुष्य राम के पद चिह्नों पर चलने का अनुकरण करना चाहता है। मनुष्य के अन्तःकरण में एक अवचेतना शक्ति सदैव कार्य करती रहती है। यह अवचेतन शक्ति भक्तिमूलक आस्था है। आस्था श्रद्धा समुदाय के द्वारा अत्यधिक रूप से व्यक्ति विशेष के जीवन में अल्प अथवा अत्यधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होती है।

रामचरितमानस रूपी भक्ति धारा को गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने विचारों के माध्यम से भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व में जन–जन तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। इतना ध्यान रहे कि भक्ति दार्शनिक विचारों से अवश्य ही ओत–प्रोत रहती है। रामचरितमानव सदा से ही विश्व समाज को प्रत्येक दृष्टि से प्रेरणा देता चला आ रहा है। यहाँ पर मन में एक प्रश्न की उत्पत्ति होती है कि, ''जो महाकाव्य लम्बे समय से हमारी आस्था को, हमारी मान्यताओं को तथा हमारे विश्वासों को काव्य रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करता रहा और हमें अपने कर्तव्य के प्रति सजग करता रहा उसकी रचना के मूल में कौन–सी प्रेरणा कार्य कर रही होगी यह शोध का विषय है। इस प्रश्न पर अनेक विद्वानों ने अपने पृथक–पृथक मत प्रतिपादित किये हैं।''[1]

रामचरितमानस में वाल्मीकि रामायण, हनुमान नाटक, प्रतिमा नाटक, योग वशिष्ठ, महावीर चरित, उत्तर रामचरित, प्रसन्नराघव, अध्यात्म रामायण, श्रीमद् भागवतपुराण, उपनिषद, महाभारत, वेद, हितापदेश तथा श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रंथों का भी प्रभाव है। इस संदर्भ में हमें श्रीरामचरितमानस में प्रमाण मिलता है कि–

''रामकथा कै मिति जग नाहीं,
असि प्रतीत तिन्ह के मन माहीं।
नाना भाँति राम अवतारा,
रामायन सतकोटि अपारा।।''[2]

तात्पर्य यह है कि रामकथा की व्यापकता अत्यधिक है परन्तु विशेषता यह है जिनके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा है उसी को यह सुन्दर प्रतीत होती है। राम के अवतारों की गिनती करना अत्यंत जटिल है उसी प्रकार रामचरित मानस की संख्या भी अगणित है। मानव चिंतनशील प्राणी है यही कारण है कि वह समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है। कर्म करना ही उसका मुख्य ध्येय है, चाहे वह इसमें सफल हो या न हो। यही कारण है कि श्रीमद्भगवद्गीता भी कर्म के सिद्धान्त को जन–जन तक प्रचारित एवं प्रसारित करती है। ''ज्ञान वह धरोहर है जो किसी से कहीं भी छिपायी नहीं जा सकती है। एक बार सर्वाधिक प्रिय वस्तु धन एवं स्त्री को तो

हम गुप्त स्थान पर रखकर जनमानस से छिपाकर रख सकते हैं, परन्तु ज्ञान को किसी भी सुरक्षित से सुरक्षित स्थान पर छिपाकर नहीं रखा जा सकता है।''[3] ज्ञान को अन्तर्मन की अनुभूति, सामाजिक बोध एवं लोक कल्याण की प्रवृत्ति ज्ञान इसे जाने–अनजाने अन्य व्यक्तियों तक, समाज और समुदाय तक पहुँचाने का कार्य करती है। ज्ञान व्यक्ति, वर्ग, समुदाय, धर्म, गोत्र आदि किसी के लिए भी अप्राप्य वस्तु नहीं है तथा न ही ये ज्ञान की अजस्र धारा में कहीं भी बाधक हैं।

रामचरितमानस सचमुच एक चरित्रकोश है। ''इसमें हमें दो सौ से अधिक पात्रों से संदर्भित चरित की प्राप्ति होती है। इन सब चरित्र जान लेने के पश्चात् जहाँ भारतीय निगमागम, धर्मशास्त्र तथा इतिहास आदि का निचोड़ प्राप्त होता हैं वहीं कुछ पात्रों के प्रति वर्तमान बुद्धि जीवी वर्ग और कुछ सक्रिय राजनायिक असहमत हो उठे है, परन्तु यह उनका भ्रम है उनमें सम्यक, ज्ञान की कमी है।''[4] उनमें भ्रम का होना स्वाभाविक है क्योंकि भ्रम तो निरन्तर भूतभावन शंकर के सहवास में रहने वाली माँ पार्वती तथा भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ आदि महान विभूतियों को भी हुआ था। यही कारण है कि समाज को भी गुमराह देखकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने दिव्य चरित को प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य समझा। इसी संदर्भ को यह चौपाई पुष्टि प्रदान करती है। यथा–

''निर्गुन रूप सुलभ अति,
सगुन जान नहि कोइ।
सुगम अगम नाना चरित
सुनि मुनि मन भ्रम होइ।।''[5]

श्रीराम चरितमानस ग्रंथ में श्रीराम का चरित अगम तथा सुगम दोनों भी है। हमें इस ग्रंथ में श्रीराम प्रभु के दो चरित्रों का दर्शन होता है उसमें से प्रथम है ऐश्वर्य चरित तथा दूसरा माधुर्य चरित। ऐश्वर्यचरित का आभास उन पात्रों को हुआ जो उन्हें एक निरीह मानव समझ रहे थे फिर इसी ऐश्वर्य चरित के माध्यम से उन्होंने खलपात्रों को धूल चटा दी यहाँ तक कि उनका अस्तित्व ही मिटा दिया तथा मृत्यु के अंतिम समय में उन्हें यह भी एहसास करा दिया कि मैं साक्षात् परमात्मा हूँ। दूसरा चरित माधुर्य अर्थात् वात्सल्य चरित है जिसे उन्होंने अपनी माता कौशल्या को सर्वाधिक एहसास कराया यथा–

''इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा,
मतिभ्रम मोर कि आन विशेषा।
देखि राम जननी अकुलानी,
प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसकानी।।
देखरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड।।''[6]

इस प्रकार एक स्वरूप से एक चरित भक्ति दृष्टि से ईश्वरत्व का प्रतिपादन करता है तथा दूसरा स्वरूप अधार्मियों के नाश, धर्म संस्थापन तथा भक्तों को लीला का आनन्द देने के लिए प्रस्तुत हुआ है। इन दोनों चरित्रों का प्रयोग श्रीराम जी राक्षसों का वध, शरणागतों की रक्षा, रामराज्य की स्थापना तथा ऋषि–मुनियों को आनन्द प्रदान करने के लिए करते हैं। कवि ने स्पष्ट रूप से अपने ग्रंथ रामचरित मानस में यह प्रतिपादित किया है कि वे नर–लीला करते हैं तथा अपने ईश्वरत्व तत्त्व का भी स्पष्ट रुपेण अवलोकन भी करवाते हैं। इसका आभास माता कौशल्या को प्रतीत होता है।

संवाद संस्कृति का आशय यह है कि एक से अनेक अर्थात् विभिन्न संस्कृति के मध्य परस्पर समझ, सम्मान एवं सहयोग में वृद्धि करने हेतु वार्तालाप संस्कृति। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पृथक–पृथक दृष्टिकोण, मान्यताएँ एवं पृष्ठभूमि वाले सार्थक से लोग परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इसके साथ–ही–साथ वे अपने तनावों को कम करके साझा समाधानों का सह–निर्माण करते हैं। संवाद के माध्यम से लोग एक दूसरे को बेहतर ढंग से समझते हैं तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि यह संवाद शांति और सतत विकास के लिए अति आवश्यक है। संवाद का अर्थ यह है कि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप। किसी भी नाटक कहानी तथा उपन्यास आदि में इसी प्रकार की क्रिया प्रतिपादित होती है। इसके अतिरिक्त संवाद किसी विशेष मुद्दे, विशेषतया राजनीति अथवा धार्मिक मुद्दों पर विचार या राय का आदान–प्रदान, सौहार्दपूर्ण समझौते या समाधान तक पहुँचने का प्रयत्न। संवाद संस्कृति को हम रामचरित मानस के रूप कह सकते हैं कि वार्तालाप के रूप में एक धार्मिक कृति।

महर्षि वाल्मीकि ने अपने ग्रंथ रामायण में मुख्य पात्रों का जिनमें आपस में संवाद (तर्क–वितर्क) होता है इस प्रकार उल्लिखित किया है– ''भूतभावन भगवान शंकर–माता पार्वती, कागभुसुण्डिगरुड तथा याज्ञवल्क्य–भारद्वाज आदि।''[7] इनके मध्य ही संवाद संस्कृति प्रवाहित होती है। इतना यहाँ पर मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि वाल्मीकि जी ने राम को मानव (मनुष्य) के रूप में ही स्वीकार करके अपने ग्रंथ रामायण की रचना की है। यही कारण है कि उन्होंने अपने ग्रंथ में उन्होंने राम को एक मानव रूप में ही स्वीकार किया है।

संवाद संस्कृति को अनेक भागों में विभक्त किया गया है जैसे आंतरिक संवाद संस्कृति, बाह्य संवाद संस्कृति तथा औपचारिक–अनौपचारिक संवाद संस्कृति। इसके अतिरिक्त भी संवाद संस्कृति को उनके उद्देश्य के आधार पर अनेक भागों में विभाजित किया जा सकता है। इस संवाद संस्कृति के लाभ इस प्रकार हैं– आंतरिक संवाद लाभ, तनाव के समाधान का लाभ, परस्पर सहयोग का लाभ तथा ज्ञान, समझ एवं शांति–विकास का लाभ।

निष्कर्ष

रामचरितमानस हमारे देश भारतवर्ष का ही नहीं अपितु विश्व का महानतम धार्मिक ग्रंथ है। इस ग्रंथ का यदि सम्यक् दृष्टि से अध्ययन किया जाये तो हमें यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति का निश्छल चरित जिसमें मानव कल्याण की भावना निहित हो के माध्यम से उत्कृष्ट ऊँचे शिखर को प्राप्त किया जा सकता है। इसी के अंतर्गत संवाद संस्कृति से तात्पर्य यह है कि आपस में ऐसा तर्क–वितर्क जो अनेक मतभेदों को सुलझाकर परस्पर रूप से सार्थकता के साथ जोड़ सके। हम यह देखते हैं कि इस ग्रंथ के माध्यम से बुराई पर अच्छाई की विजय को अत्यंत विस्तृत ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त हमें यह भी ज्ञात होता है कि समाज में मानवता के प्रति अहितकर कार्य करने वाला भी अपने अन्तिम समय (मृत्यु के समय) में बहुत ही पश्चाताप करता है तथा अपनी आगामी पीढ़ी को सचेत करके ही इस संसार से विदा लेता है। इसके अतिरिक्त वह स्वयं यह भी स्वीकार करता है कि मनुष्य को मानव हित में ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. तुलसीदासकृत रामचरितमानस और गिरधरकृत रामायण का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ. वी.आर. सोलंकी, पृ. 133, संस्करण 2009, शान्ति प्रकाशन दिल्ली।
2. श्रीरामचरितमानस–गोस्वामी तुलसीदास, बालकाण्ड।
3. तुलसीदासकृत रामचरितमानस और गिरधरकृत रामायण का तु.अ., पृ. दो शब्द (भूमिका)
4. रामचरितमानस में चरित्र–सृष्टि–डॉ. योगेश दुबे, पृ. 11, संस्करण 2008, ज्ञान प्रकाशन कानपुर।
5. श्रीरामचरितमानस–गोस्वामी तुलसीदास, बालकाण्ड
6. वही, बालकाण्ड
7. रामायण–महर्षि वाल्मीकि

Cite this Article-

"डॉ. पी.एम. भुमरे", "रामचरितमानस और संवाद संस्कृति का परिवेश", ResearchNext International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3107-9725 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."